Demand for establishment of a Lithium-Ion Battery Recycling Research Centre and Hub in Madhya Pradesh

श्रीमती सुमित्रा बाल्मीक (मध्य प्रदेश): माननीय उपसभापति महोदय, मैं एक महत्वपूर्ण विषय के बारे में कहना चाहूंगी, जो कि समय की एक महत्वपूर्ण मांग है। भारत आज इलेक्ट्रिकल व्हीकल (ईवी) क्रांति के दौर से गुजर रहा है। यह हमारे यशस्वी प्रधान मंत्री माननीय नरेन्द्र मोदी जी के दूरदर्शी नेतृत्व का ही परिणाम है। ईवी सेक्टर के बढ़ने के साथ ही एक महत्वपूर्ण विषय सामने आ रहा है और वह है - लिथियम आयन बैटरियों की सुरक्षित रीसाइकल है और उन्हें पुनः उपयोग में लाना। महोदय, ईवी बैटरियों में lithium, cobalt, nickel और अन्य महत्वपूर्ण तत्व होते हैं, जिन्हें अगर सही तरीके से रीसाइकल किया जाए, तो इनको फिर से उपयोग में लाया जा सकता है। इससे हम महंगे और दुर्लभ खनिजों को बाहर से आयात करने की बजाय अपनी ही देश में तैयार कर सकते हैं और आत्मनिर्भर भारत के संकल्प को और मजबूत कर सकते हैं।

माननीय महोदय, अगर मध्य प्रदेश में विशेष रूप से जबलपुर में एक लीथियम आयन बैटरी रिसर्च और रीसाइकलिंग सेंटर स्थापित हो जाए, तो बहुत ही अच्छा होगा। जबलपुर की अपनी भौगोलिक स्थिति के कारण यह एक आदर्श स्थान भी है। यह राज्य के केंद्र में स्थित है और यहां पर्याप्त भूमि और श्रम बल भी है। महोदय, यहां एक बड़ा प्रोसेसिंग हब बने, जहां ईवी बैटरियों का वैज्ञानिक रूप से पुनर्चक्रण हो और उनसे उच्च शुद्धता वाली धातुओं को निकाला जाए। यह केंद्र दुनिया का सर्वश्रेष्ठ रीसाइकलिंग केंद्र होगा। इसमें भोपाल, इंदौर, ग्वालियर जैसे शहरों में छोटे-छोटे प्रोसेसिंग यूनिट्स स्पोक्स बनाएं जाएं, जिनको मुख्य रीसाइकलिंग हब से जोड़ा जाए। महोदय, इससे लॉजिस्टिक आसान होगी और हर क्षेत्र में ईवी बैटरियों का सही निपटान सुनिश्चित हो सकेगा।

महोदय, इस क्षेत्र में नए स्टार्टअप्स, एमएसएमईज़ को प्रोत्साहित करने के लिए एक विशेष फंड बनाया जाए, जिससे उन्हें वित्तीय, भूमि और लॉजिस्टिक सहायता मिल सके। इससे रोजगार के नए अवसर भी जुड़ेंगे। बैटरी वापिस करने वालों के लिए इन्सेन्टिव योजना लाई जाए। आम नागरिक और उद्योग जो बैटरियों को रीसाइकलिंग के लिए देते हैं, उन्हें विशेष प्रोत्साहन दिया जाए, ताकि ईवी बैटरियों को लापरवाही से फेंकने की बजाय रीसाइकलिंग के लिए दिया जाए। महोदय, भारत ईवी रीसाइकलिंग का एक ग्लोबल मास्टर हब बन सकता है। अगर हम समय पर कदम उठाते हैं, तो आने वाले वर्षों में भारत ईवी बैटरियों के रीसाइकलिंग क्षेत्र में अग्रणी बन सकता है। मैं सरकार से निवेदन करती हूं कि जबलपुर में एक महत्वपूर्ण केंद्र की स्थापना की जाए और इसे विश्व स्तर पर रिसर्च सेंटर बनाया जाए।

MR. DEPUTY CHAIRMAN: The following hon. Members associated themselves with the matter raised by hon. Member Shrimati Sumitra Balmik: Dr. Sasmit Patra (Odisha), Shri Dhananjay Bhimrao Mahadik (Maharashtra), Shri Vivek K. Tankha (Madhya Pradesh), Dr. Sumer Singh Solanki (Madhya Pradesh), Ms. Kavita Patidar (Madhya Pradesh), Shrimati Geeta alias Chandraprabha (Uttar Pradesh),

Dr. Kalpana Saini (Uttarakhand), Shri Digvijaya Singh (Madhya Pradesh), Shri R. Girirajan (Tamil Nadu) and Shrimati Maya Naroliya (Madhya Pradesh).

Shri Nagendra Ray, "Demand for inclusion of Rajbanshi language in Eighth Schedule of the Constitution."

Demand for inclusion of Rajbanshi language in the Eighth Schedule to the Constitution

SHRI NAGENDRA RAY (West Bengal): Respected, Sir, I would like to raise a matter of the urgent public importance of ethnical Rajbanshi language which has been inherited from the ancient human civilization from era to era. It is found in the stone and bronze script, banquet and ancient religious books like the Ramayana, Mahabharata, Padma Purana, Vedas, Upanishads, Bishnupurana and Tantra-Mantra (Super natural power).

Sir, the word "Rajbanshi" literally means 'royal dynasty'. Rajbanshi language is always with 'ongkar' sound created from galaxy and used by the Royal dynasty denoting creation, for example, 'Khaisong, Gaisong, Nichong, Dichong'.

Rajbanshis forms an indigenous community of human civilisation. It has footprints in many parts of the country and it is fondly followed and spoken by a majority of the people belonging to all castes living in West Bengal, Odisha, Bihar, North-East of India and some part of Uttar Pradesh. Its popularity and usage is restricted not only to India, but also spoken in Bangladesh, Nepal, Bhutan and Burma. According to Linguistic Survey made by George Abraham Grierson, an Irish administrator and world linguist, Rajbanshi language is being spoken by the clan of Rajbanshi Dynasty.

For the first time, Maharaja Nara Narayan had composed prose-literature in Rajbanshi language. He had also written a letter to the Ahom King in the year 1555 by using this Royal language which is a historical fact.

Sir, it is my humble request that the Central Government takes immediate steps for inclusion of the Rajbanshi language in the 8th Schedule to the Indian Constitution to fulfill the aspirations of the people who are emotionally, culturally, socially and inherently connected with the Rajbanshi clan and do justice to their *bona fide* demand. Thank you, Sir.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: The following hon. Members associated themselves with the matter raised by hon. Member, Shri Nagendra Ray: Shrimati Sadhna Singh (Uttar Pradesh), Shri Chunnilal Garasiya (Rajasthan), Shri Banshilal Gurjar (Madhya